एक अदद शब्द के लिए

चलिए बाज़ार तक चलें...

संपादक
डॉ. शिखा तिवारी, इं. माधव कृष्ण

ISBN : 978-93-91635-15-2

पुस्तक : **एक अदद शब्द के लिए चलिए बाज़ार तक चलें**

संपादकद्वय © : डॉ. शिखा तिवारी, इंजी. माधव कृष्ण

प्रकाशक : **उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स**

A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर –208 021 (उ.प्र.)

Email : utkarshpublisherskanpur@gmail.com

Mob. : 8707662869

संस्करण : प्रथम, 2022

मूल्य : 195/–

आवरण सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : सार्थक डिजिटिल, कानपुर

13

नवगीत के सच्चे सिपाही : डॉ. उमाशंकर तिवारी

–डॉ निरंजन यादव

आधुनिक हिन्दी कविता में छायावाद एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इसमें एक तरफ हिन्दी कविता अपनी भाषा में परिपक्व होकर अन्य भारतीय भाषाओं के समानान्तर उत्कृष्ट साहित्य का सृजन होता है, तो वही दूसरी तरफ यह 'नव गति नव लय ताल छंद नव' के माध्यम से कविता में नवता का सूत्रपात भी करता है। इसी नवता के आग्रह ने आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न स्वरूपों को विकसित किया। आधुनिक हिन्दी कविता में नयी कविता और नवगीत इसी विकास यात्रा की परिणति है। नवगीत आधुनिक हिन्दी कविता की वह धारा है, जिसमें गति, लय और छंद की अनिवार्यता है। इसके साथ ही इसमें सामाजिक एवं पारम्परिक मूल्यों के साथ जन–जीवन के विविध रूप रंगों की अभिव्यक्ति मिलती है। जिसे हम डॉ0 उमाशंकर तिवारी की रचनाओं को पढ़ते हुए बखूबी महसूस करते हैं।

डॉ0 उमाशंकर तिवारी नवगीत विधा के एक महत्वपूर्ण कवि हैं। इन्होंने अपने लेखन से नवगीत विधा को न सिर्फ समृद्ध किया; बल्कि उसे एक नई दिशा प्रदान की। इनके गीतों को पढ़ने से लगता है कि तिवारी जी का जिन्दगी के जानिब रवैया सकारात्मक रहा है। उन्होंने अपने जीवन का पैमाना सफलता के बजाय सार्थकता को बनाया है। उनकी प्रतिबद्धता जीवन, समाज एवं साहित्य के प्रति सर्वाधिक रही है। मु0 हारून रशीद खान को दिये साक्षात्कार में वह कहते हैं कि "भारतीय नागरिकों के सुख–दुःख का एक मैं हिस्सा हूँ।" वह इन्हीं के साथ रहे, इन्हीं के लिए काम किया, इन्हीं की चिन्ता में घुलते रहे, गुनते रहे। इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ था लेकिन उनकी छवि एक कवि एवं साहित्यकार के रूप में विद्यमान है। वह कवि क्या? जो जातिवादी संकीर्णताओं से मुक्त न हो सके। जीवन और साहित्य की एकरूपता हिन्दी प्रदेश में दुर्लभ है। इस दुर्लभ परम्परा को सहज रूप में चरितार्थ करने वाले व्यक्ति का नाम ही उमाशंकर तिवारी है। इन्होंने सिर्फ पोथियों एवं मंचों के माध यम से आदर्श गढ़ा नहीं है, अपितु उसे अपने जीवन में चरितार्थ भी किया है। इनका कोई छद्म रूप नहीं। वह आजीवन इस छद्म के विरूद्ध संघर्षरत रहे हैं। अपने जीवन में भी और साहित्य में भी। माधव कृष्ण अपनी पुस्तक 'हिमशिला की देह थे घटते रहे' में लिखते हैं कि "डॉ0 तिवारी जिस आसानी

नहीं है। उसमें जहाँ कहीं भी प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है, बिल्कुल यथार्थ के धरातल पर, चाहे वह वैयक्तिक यथार्थ हो या सामाजिक यथार्थ। नवगीतकार प्रेम की विभिन्न स्थितियों का साक्षात्कार कर अपनी अनुभूतियों को वर्तमान के संदर्भ में प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाएँ पारम्परिक प्रेम गीतों से भिन्न होती है। उसमें लिजलिजी भावुकता, झूठा रोमांस और काल्पनिक वातावरण नहीं होता। नवगीत के नाम पर प्रस्तुत किसी रचना में यदि ये तत्व किंचित मात्रा में दिखलाई पड़े तो उन्हें नवगीत न मानने में कोई संकोच नहीं होनी चाहिए।''

तिवारी जी अपनी स्थापनों में बिल्कुल स्पष्ट हैं। वह नवगीत के एक सच्चे सिपाही हैं। जिन्होंने नवगीत के विकास के लिए आजीवन काम किया। उनके व्यक्तिगत प्रयास किसी भी मायने में संस्थागत प्रयास से कम नहीं थे। यदि हम उन्हें व्यक्ति नहीं संस्था की उपाधि से अलंकृत करें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। गाजीपुर, मऊ, आजमगढ़, बलिया एवं बनारस, आदि शहरों में उनके कर्म सुवास को आज भी महसूस किया जा सकता है। सन् 2021 में उनके जयंती के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी ने इस बात को स्वीकार किया कि डॉ0 तिवारी ने नवगीत के संस्कार जो बीज रूप में उस समय डाले थे वह अब पुष्पित पल्लवित हो रहा है। जायसी ने पद्मावत में लिखा है कि 'फूल मरै पर मरै न वासू।' यह उक्ति डॉ0 उमाशंकर तिवारी पर बखूबी चरितार्थ होती है।

तिवारी जी का गद्य भी काव्य की तरह अनुशासित है। उनकी आलोचना एवं निबंधों को पढ़ते हुए कहीं भी बोझिलता का अनुभव नहीं होता। पहले वह सूत्र रूप में अपनी बात को कहते हैं फिर उसका विस्तार करते हैं। यह शैली आचार्य शुक्ल के यहाँ मिलती है और तिवारी जी के यहाँ भी। जैसे– ''नवगीत व्यक्तिवादी काव्य नहीं है। नवगीत जीवन से सीधे जुड़ा हुआ काव्य है। नवगीत पूर्णतः युगबोध का काव्य है एवं नवगीत सही अर्थों में प्रगतिशील और जनवादी काव्य है। इत्यादि। ऐसे अनेक उद्धरण उनके लेखों में भरे पड़े हैं। जिससे यह पता चलता है कि वह सिर्फ लिखने के लिए नहीं लिख रहे हैं जैसा कि आजकल चलन में हो गया है कवि और आलोचक, बल्कि वह इसलिए लिख रहे हैं कि उस समय उसकी जरूरत थी। जिस विधा के वह कवि हैं उस विधा की महत्ता को रेखांकित करना उनका धर्म था। जिसका उन्होंने सम्यक् ढंग से निर्वहन किया। उन्होंने आने वाले समय के लिए एक राह बनाई जिस पर हजारों लोग चल सकें। पूरे आत्म विश्वास के साथ। पूरे स्वाभिमान के साथ–

धार में बहते हुए जो हँस पड़े तो
फूल होंगे पात होंगे
गंध बनकर उड़ चले, उड़ते चले तो, हम हजारों हाथ होंगे।

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी) राजकीय महिला
महाविद्यालय, गाजीपुर